अर्हत् वचन
ARHAT VACANA

जुलाई-दिसम्बर 2015
July-December 2015

वर्ष - 27, अंक - 3-4
Vol. - 27, Issue - 3-4

विश्व में सबसे ऊँची अखण्ड पाषाण की
108 फुट भगवान ऋषभदेव की निर्माणाधीन दिगम्बर जैन प्रतिमा

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर
KUNDAKUNDA JÑĀNAPĪṬHA, INDORE

Scanned with CamScanner

I.S.S.N. - 0971 - 9024

R.N.I. No. 50199/88

अर्हत् वचन
ARHAT VACANA

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ (देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर द्वारा मान्यता प्राप्त शोध संस्थान) , इन्दौर द्वारा प्रकाशित शोध त्रैमासिकी

Quarterly Research Journal of Kundakunda Jñānapīṭha, INDORE
(An Institute Recognised by Devi Ahilya University, Indore)

वर्ष 27, अंक 3-4 — जुलाई-दिसम्बर 2015
Volume 27, Issue 3-4 — July-December 2015

मानद सम्पादक
डॉ. अनुपम जैन
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष - गणित
शासकीय महाविद्यालय
सांवेर (इन्दौर) - 453 551

HONY. EDITOR
Dr. Anupam Jain
Professor & Head-Deptt. of Mathematics
Govt. Degree College,
Sanwer (INDORE) - 453 551

0731-2797790, 094250 53822

❖ ❖ ❖

प्रकाशक
डॉ. अजितकुमारसिंह कासलीवाल
अध्यक्ष
कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ
584, महात्मा गांधी मार्ग, तुकोगंज,
इन्दौर 452 001 (म.प्र)

PUBLISHER
Dr. Ajitkumarsingh Kasliwal
President
KundaKunda Jñānapīṭha
584, M.G. Road, Tukoganj,
INDORE - 452 001 (M.P.) INDIA

0731- 2434718, 09302104700
Website : www.kundkundgyanpeeth.org

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर की ओर से अध्यक्ष- डॉ. अजितकुमारसिंह कासलीवाल द्वारा 584, महात्मा गांधी मार्ग, इन्दौर से प्रकाशित एवं सुगन ग्राफिक्स, LG - 11, ट्रेड सेन्टर, साऊथ तुकोगंज, इन्दौर से मुद्रित, फोन : 4065518 सम्पादक : डॉ. अनुपम जैन, इन्दौर

Scanned with CamScanner

वर्ष - 27, अंक - 3-4, जुलाई-दिसम्बर 2015, 21-30

अर्हत् वचन
कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर
ISSN 0971-9024

भगवान अरिष्टनेमि का जीवन दर्शन : एक ऐतिहासिक अध्ययन

■ समणी संगीतप्रज्ञा*

सारांश

मोहनजोदारों की खुदाई में प्राप्त अवशेषों एवं ऋग्वेद आदि वैदिक परम्परा के प्राचीन ग्रंथों में प्राप्त उद्धरणों से जैनधर्म की प्राचीनता तो असंदिग्ध है, किन्तु पुरातात्त्विक एवं ऐतिहासिक साक्ष्य महावीर के पूर्ववर्ती तीर्थंकरों के सम्बन्ध में विरल हैं। प्रस्तुत आलेख में वैदिक परम्परा तथा श्वेताम्बर जैन परम्परा मान्य ग्रंथों से 22वें तीर्थंकर अरिष्टनेमि के सन्दर्भों का संकलन कर उनके अस्तित्त्व को प्रमाणित किया गया है। सम-सामयिक रूप से द्वितीयक स्रोतों एवं विदेशी सन्दर्भों का भी उपयोग किया है।

तीर्थङ्कर ऋषभदेव की परम्परा में बाईसवें तीर्थङ्कर अरिष्टनेमि हुए, जो बड़े प्रभावशाली महापुरुष थे। अनेक जन्मों को पार करने के बाद वे यमुना तट पर अवस्थित शौर्यपुर के राजा समुद्रविजय और रानी शिवादेवी के पुत्र रूप में जन्मे। यादववंशी समुद्रविजय के अनुज का नाम था वसुदेव, जिनकी दो रानियाँ थीं, रोहिणी और देवकी। रोहिणी के पुत्र का नाम बलराम या बलभद्र था और देवकी के पुत्र का श्रीकृष्ण।

महापुरुष श्रीकृष्ण और अरिष्टनेमि की अनेक बाल लीलाएँ प्रसिद्ध हैं। उनके बीच शक्ति प्रदर्शन भी अनेक बार हुआ है, जिनमें अरिष्टनेमि सदैव जीतते रहे हैं। यह शायद उनके ब्रह्मचर्य का प्रताप रहा है। अरिष्टनेमि के विवाह का आयोजन भोजवंशी उग्रसेन की पुत्री राजीमती के साथ हुआ, पर विवाह के लिए वध्य पशुओं को देखकर उनके मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया और वे जिनदीक्षा लेकर तपस्या करने निकल पड़े। राजीमती ने भी बाद में दीक्षा ले ली। अरिष्टनेमि ने कठोर तपस्या करते हुए केवलज्ञान प्राप्त किया और फिर वे अरिहंत हो गये। उनकी यह भविष्यवाणी अक्षरशः सिद्ध हुई कि यादवों की उद्दण्डता के कारण द्वैपायन मुनि के क्रोध से द्वारिका नगरी बारहवें वर्ष में जल जाएगी।

तीर्थङ्कर ऋषभदेव के बाद जैनधर्म और परम्परा के विकास का सूत्रपात हुआ। उत्तरवर्त्ती तीर्थङ्करों का काल आया और लगभग नेमिनाथ तक ऐसा काल रहा, जिसके विषय में इतिहास अभी तक मौन है, किन्तु साहित्यिक और पौराणिक परम्परा उनका विस्तृत परिचय अनुस्यूत किये हुए है। उनके सन्दर्भ में किसी को किसी भी प्रकार का मतभेद नहीं है। अतः पुरातत्त्व की भले ही सीमा रही हो पर इतिहास परम्परा को बिल्कुल झुठला नहीं सका। अन्तिम दो तीर्थङ्करों की ऐतिहासिकता में तो अब कोई सन्देह ही नहीं है।

बाईसवें तीर्थङ्कर नेमिनाथ के काफी उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में मिलते हैं। अंगुत्तर निकाय के धम्मिक सुत्त में उन्हें ''अरनेमि'' नाम दिया हैं, दीर्घनिकाय का इसीगिली सुत्त उन्हें ''दृढ़नेमि'' कहकर स्मरण करता है, तो ऋग्वेद और यजुर्वेद नेमि और अरिष्टनेमि कहकर पुकारते हैं। उपनिषद् साहित्य में उल्लिखित अंगिरस ऋषि नेमिनाथ का प्रतिनिधित्व करते दिखाई देते हैं।

अरिष्टनेमि के संदर्भ में कतिपय वैदिक और पौराणिक साहित्य से उल्लेख प्रस्तुत कर देना उपयोगी होगा-

* सह आचार्य, संस्कृत एवं प्राकृत विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं - 341306 (राजस्थान)

Scanned with CamScanner